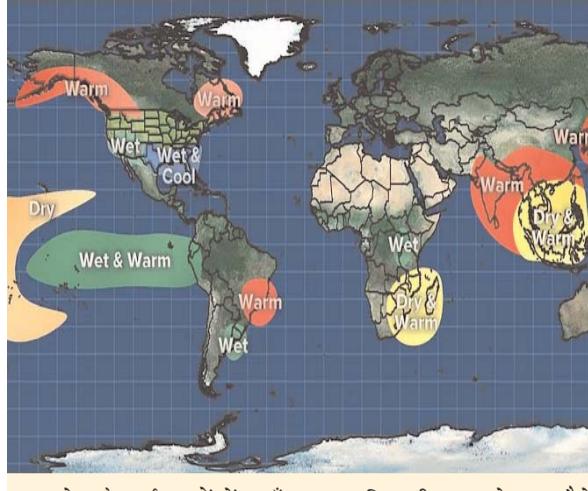


सम्पादकीय मौसम का बदलता मिजाज, खेती- किसानी पर भारी पड़ रहा है अलनीनो



दुदश के कई राज्यों में जहाँ ज्यादा बारिश का वजह से बाढ़ जैसे हालात हैं वहाँ कई राज्य उम्मीद से काफी कम बारिश से सूखे की स्थिति का सामना कर रहे हैं। देश के कई राज्यों में जहाँ ज्यादा बारिश की वजह से बाढ़ जैसे हालात हैं वहाँ कई राज्य उम्मीद से काफी कम बारिश से सूखे की स्थिति का सामना कर रहे हैं। भारतीय मौसम विभाग (आइएमडी) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार, पूर्वोत्तर भारत के कुछ राज्यों को छोड़कर देश के अन्य भागों में वर्षा की भारी कमी देखी गई है। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार, अल नीनो के प्रभाव की वजह से पिछली एक सदी से ज्यादा अवधि में अगस्त का यह महीना देश में सबसे अधिक सूखा रहा। अगस्त के महीने में 1901 के बाद सबसे कम बारिश हुई है। देश में वर्षा के आंकड़े 1901 से ही रेफरेंस के तौर पर रखे जाते हैं। बारिश की ऐसी गतिविधि चावल से लेकर सोयाबीन तक, गर्मियों में बोई जाने वाली फसलों की पैदावार को नुकसान पहुंचा सकती है, जिससे कीमतें बढ़ सकती हैं। इससे देश में समग्र खाद्य महंगाई बढ़ सकती है, जो जनवरी 2020 के बाद से जुलाई में सबसे ज्यादा हो गई है। अलनीनो की वजह से देशभर में अगस्त के महीने में 34 इस कालम में मैं मणिपुर स्कट पर शायद व्यर्थ ही, ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करूँगा, जो सातवें महीने में प्रवेश कर चुका है। मणिपुर के प्रति मेरी उत्सुकता शुरुआत में एक इतिहासकार की उत्सुकता थी कि 1949 में स्वतंत्र भारत का हिस्सा बनने के बाद से उसकी अब तक की यात्रा कैसी रही है। मणिपुर के प्रति मेरी रुचि कुछ साल पहले उस राज्य की यात्रा करने पर बढ़ी जब भी जब मैं उसके प्राकृतिक सौंदर्यसे संगीत और नृत्य की उसकी समृद्धि परंपरा, वहाँ की स्त्रियों की स्वतंत्रता और तीन मुख्य नस्लीय समूहोंमें मैतेई, नगा कुकी और कुकी के एक

डबल इंजन सरकार की विफलता का सबब है मणिपुर की हिंसा

दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धी संबंधों बारे में देख-जानकर दंग रह गया। इतिहासकार और पर्यटक, दोनों भौमिकाओं में मैं मणिपुर में व्यवस्था तनावों को देख पाया था, लेकिन वहाँ का मौजूदा संकट न सिर्फ़ अभूतपूर्व है, बल्कि सोचा भी नहीं गया था कि संकट यह रूप लेने पिछले कुछ महीनों से मैत्रैई 3 कुकु उग्रवादी एक दूसरे से दुष्प्रभाव की तरह पेश आ रहे हैं। वहाँ हिंसा हुई, उसे ऑनलाइन और भीषण रूप दिया गया। जैसा कि वह जानते हैं, गोदा मीडिया ने मणिपुर हिंसा के घोरों को छिपाया 3 उनकी अनदेखी की। सौभाग्य कुछ स्वतंत्र वेबसाइटों ने हमें बताया कि वहाँ वास्तव में हो वाया रहा मैंने भी वहाँ रहने वाले असहयोगियों के संपर्क में रहते हैं। उनसे लगातार बातचीत की। मेरा विश्लेषण इन्हीं सबकूटों के आधार है। ऐसा नहीं है कि मई, 2023 के पहले राज्य में मैत्रैई और कुकु सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते थे। उनका धर्म अलग है, ज्यादातर कुकु की ईंस्ट्रेंज हैं, जबकि अधिसंघ्य मैत्रैई हिंदू कुकु की पहाड़ों में रहते हैं, जबकि मैत्रैई का इफाल घाटी में वर्चस्व मैत्रैई राजनेता जिस वर्चस्व का रखवाये का प्रदर्शन करते थे, तबकुकियों को क्षुब्ध करता था। जबकि मैत्रैई शिकायत करते थे कि कुकुओं को अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिला हुआ है, उससे उनकी नौकरी मिलने में आसानी होती



नस्लाय आर धामक हिंसा हमार यहां आम है। इसके बावजूद हिंसा के स्तर और ध्रुवीकरण के कारण मणिपुर की हिंसा बेहद गंभीर है। स्वतंत्र विश्लेषकों द्वारा इकड़ा किए गए सबूत बताते हैं कि इस हिंसा में कुकी को अपेक्षाकृत ज्यादा नुकसान हुआ, क्योंकि मैतैई समुदाय का पास सत्ता की ताकत है, पुलिस और नौकरशाही मैतैई राजनेताओं को ही रिपोर्ट करती है। इस विषमता से जुड़ा एक तथ्य यह है कि राज्य में, एक आंकड़े के मुताबिक, दो सौ से भी गिरजाघरों को ध्वस्त कर दिया गया है। राज्य की इस बदहाली के लिए तीन लोगों को अपनी जवाबदेही स्वीकारनी ही चाहिए। इनमें से पहले हैं राज्य के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह, जो स्पष्ट रूप से मैतैई समुदाय के पक्ष में दिखा। बारन प्रकाश के नेतृत्व वाली सरकार वैचारिक पक्षपात इसकी प्रशासनिक अक्षमता से पूरी तरह मेल खाया दिखा है। द इंडियन एक्सप्रेस रिपोर्ट के मुताबिक, हिंसा शुरू होने की राज्य सरकार ने उग्रवादियों को बड़ी मात्रा में हथियार लूटने की अनुमति ही नहीं दी, बल्कि प्रोत्साहित भी किया। हिंसा के दूसरे महीने से अधिक हो चुके हैं, लेकिन लूटे गए हथियारों का मामूली हिस्सा की ही बरामदी हुई है। मणिपुर की इस त्रासदी के लिए जो दूसरे व्यापक जिम्मेदार हैं, वह हैं कंद्रीय गृह मंत्री जिन्होंने राज्य के एक छोटे-से विभाग के अलावा हिंसा रोकने के लिए शायद ही कोई प्रभावी कदम उठाया। इसके बजाय उन्होंने उन राज्यों को

मतदाताओं को ध्वनीकृत करने के लिए अपनी ऊर्जा खर्च की, जहां विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। तीसरे व्यक्ति हैं खुद प्रधानमंत्री, जिन्होंने राज्य का दौरा ही नहीं किया, इसके बजाय उन्होंने मुख्यमंत्री और अपने गृह मंत्री को अपनी मनमर्जी का करने दिया। चाहे यह संवेदनहीनता हो या फिर दंभ, लेकिन मणिपुर के लोगों के प्रति कोई सचिन न दिखाना देश के प्रधानमंत्री के लिए शोभनीय नहीं है। नरेंद्र मोदी अगर मणिपुर का दौरा करते और पहाड़ तथा घाटी, दोनों जगह जाते, तो इससे यह संदेश जाता कि उन्हें मणिपुर की फिर है। इससे संभवतः दोनों हिंसक समुदायों के नेताओं के बीच बातचीत और मेलजोल की शुरुआत भी हो सकती थी। मुख्यमंत्री बीरेन सिंह के पक्षापाती आचरण का कारण शायद यह है कि मैतेईं समुदाय के वर्चस्ववाद का संदेश देकर वह राज्य की सत्ता में बने रह सकते हैं। लेकिन अमित शाह और नरेंद्र मोदी ने मणिपुर और वहां के लोगों के प्रति उपेक्षा का परिचय क्यों दिया? क्या इसलिए कि बीरेन सिंह को बर्खास्त करने से, जो उनका पहला फैसला होना चाहिए था, उनकी कमजोरी प्रमाणित होती? क्या इसलिए कि कुकियों को निशाना बनाने से लोकसभा चुनाव में उन्हें बड़ी संख्या में हिंदुओं के बोट मिलेंगे? या हिंसा न रोक पाना उनकी अयोग्यता का सबूत है? अपने नायक सरदार वल्लभभाई पटेल के स्वभाव के विपरीत, मोदी और शाह प्रोपोगेंडा फैलाने और अपनी छवि चमकाने में माहिर हैं, इन दोनों में ही पटेल की तरह ज्ञान के साथ शासन करने या समझ-बूझ व लोगों की परवाह करते हुए प्रशासन चलाने की योग्यता का अभाव है। पिछले कुछ महीनों में प्रधानमंत्री और गृह मंत्री ने मणिपुर पर चुप्पी साथ रखी है, जबकि राजस्थान, तेलंगाना और दूसरी जगहों में चुनाव प्रचार करते हुए वे कई मुद्दों पर बोल रहे हैं। दिलचस्प यह है कि आरएसएस के सरसंघचालक ने विजयदशमी के अपने संबोधन में कहा, %लंबे समय से साथ रह रहे मैतेईं और कुकी आपस में बयों लड़ रहे हैं?...इससे किसको लाभ मिलता है? क्या इसमें बाहरी हाथ है? देश में मजबूत सरकार है। गृह मंत्री ने राज्य का दौरा किया है। इसके बावजूद जब शांति रहती है, तब कुछ त्रासदियां घटित होती हैं।% मोहन भागवत के भाषण के पहले और बाद में भी सोशल मीडिया पर हिंदुत्वादियों ने मणिपुर हिंसा के लिए बाहरी तत्वों को जिम्मेदार ठहराया है। मणिपुर हिंसा का इतने लंबे समय तक जारी रहना और अब भी इसका हल न निकल पाना 'डबल इंजन सरकार' की विफलता है।

जानना जरूरी है संरक्षिति के पत्रों से, कैसे बना संसार का प्रथम श्लोक?

महर्षि वाल्मीकि ने अपने शिष्य
गरद्धाज से कहा, 'मेरे मुख से जो
बंद निकला है, वह शोक की
पवस्था में उत्पन्न हुआ है इसलिए
मेरे 'अस्त्रे' बहुत उत्पाता'

से 'श्लोक' कहा जाएगा।' श्लोक शब्द सुनते ही मन में अंगलिक कार्य की छवि आँखों के सामने उपर आती है। परंतु आपको वास्त्री होगा कि श्लोक जैसे पवित्र दंड की उत्पत्ति एक निर्दोष जीव की जल्दत्वा के कारण हुई। संसार का प्रथम श्लोक, वास्तव में एक ऋषि द्वारा बनजाने में दिया गया शाप है! कथा है कि एक बार देवर्षि नारद, महर्षि वाल्मीकि से मिलने तमसा नदी पर अथृत उनके आश्रम में गए। तब वाल्मीकि ने नारद से प्रश्न किया कि संसार में इस समय ऐसा गुणवान्-मर्मज्, सत्यवक्ता, सामर्थ्यशाली, पर्यदर्शन (सुंदर), कार्तिमान् व्यक्ति जैन है, जिसके कोप से देवता भी उत्तरते हैं? नारद ने वाल्मीकि को व्यक्तवाकु वंश में उत्पन्न हुए दशरथङ्गपुत्र



श्रीराम के विषय में बताया। इसके बाद देवर्षि लौट गए। इधर, तमसा ने स्वच्छ जल देखकर वालमीकि के पास में स्नान करने की इच्छा हुई। उन शिष्य भरद्वाज भी उनके साथ थे। जिस समय त्रैषि, नदी में स्नान करने वाले तैयारी कर रहे थे, विधाता की कल्पना प्रथम 'श्लोक' की उत्पत्ति की पटक लिख रही थी। तमसा के तट पर त्रैषि (सारस अथवा बगुला प्रजाति) व

पक्षी) का एक जोड़ा काम-क्रीड़ा रत था। एक निशाद की दृष्टि उस पर पड़ी। उहें देखकर निशाद ने क्रौंच युग्म पर निशाना साधकर बाण चलिया। निशाद का बाण, नर क्रौंच वाहती के पार हो गया। उसे छटपटाकर देखकर मादा क्रौंच विलाप कर लगी। कुछ ही क्षण बाद, नर क्रौंच प्राण निकल गए। क्रौंच-वध का अप्रकरण वालमीकि की दृष्टि में अद्भुत

था। वाल्मीकि को इतना शोक हुआ कि उनके मुख से एक छंद निकल गया था-

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगम
शाश्वतीः समाः ।
यत्कौंचिमथुनादेकमवधी-
काममोहितम् ॥

अर्थात् - हे निषाद ! तुझे का प्रतिष्ठा (सम्मान) न मिले वर्याकि तू काम से मोहित इस त्रौंच के जोड़े से एक की हत्या की है। यह कहने उपरांत महर्षि वाल्मीकी को एहसास हुआ कि उन्होंने वास्तव में शाप दिया है और अनजाने में उससे एक नए दृश्य की रचना हो गई। उन्होंने अपने शिष्य भरद्वाज से कहाँङ्गे मेरे मुख से जो छन्द निकला है, वह शोक की अवस्था उत्पन्न हुआ है, इसलिए इसे 'श्लोक' कहा जाएगा।%बाद में छंद पर अधिक विचार करने पर वाल्मीकी ने पाण्डितों कि वह छंद चार पाद में आबद्ध नहीं और प्रत्येक पाद में आठ-आठ अक्षर थे। कुल मिलाकर, 32 अक्षर वाले इस छंद को लय में भी गाया जा सकता है।

सकता था। छोड़ को 'अनुषुप्त' वात्मीक द्वारा संसार के प्रथम यहां प्रश्न उठ वात्मीक द्वारा पहला श्लोक वैदिक-कालीन उपलब्ध छेद दरअसल है अधिकांश छोड़ कहलाते हैं। मंजु जाता है कि वे अपितु गहन मानस- पटल स्वयं अवतरण संभवत- ऋग्वा है। ऋग्वा शब्द है जिसका करना। वेदों में किसी न का स्तुति/प्रशंसा न छह में से एक जो के अनुसार,

प्रकार के छंदों का उल्लेख मिलता है और इनकी रचना के नियम भी अलग हैं। यह भी रोचक तथ्य है कि जहां सबसे पहले श्लोक का प्रयोग (अनजाने में) शाप देने के लिए हुआ, वहीं आज श्लोक (और मन्त्रों आदि) का अधिकांश प्रयोग पूजा-अर्चना अन्य मांगलिक कार्यों की सिद्धि के लिए किया जाता है।

24,000 श्लोकों से युक्त रामायण ग्रंथ की रचना

महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी में स्नान करके पुनःअपने आश्रम में लौट आए किंतु उनके मन से श्लोक का विचार नहीं गया। तभी सृष्टिकर्ता भगवान् ब्रह्मा ने उहें दर्शन दिए और बोले छँ 'महर्षि, आपके मुख से यह छंद, मेरी ही प्रेरणा से निकला है। इसलिए अब आप इसी छंद का प्रयोग करके श्रीराम के संपूर्ण चरित्र का वर्णन कीजिए।' इस तरह कालांतर में, वाल्मीकि द्वारा 24,000 श्लोकों से युक्त संपूर्ण 'रामायण' ग्रंथ की रचना हुई।

रंगत खोते हमारे सामाजिक त्यौहार !



बाजारीकरण ने सारी अवस्थाएं बदल कर रख दी है। हमारे उत्सव-त्योहार भी इससे अछूते नहीं रहे। शायद इसीलिए प्रमुख त्योहार अपनी रंगत खोते जा रहे हैं और लगता है कि त्योहार सेफ़ औपचारिकताएं निभाने के लिए मनाये जाते हैं। किसी के पास सुरक्षत ही नहीं है कि इन प्रमुख त्योहारों के दिन लोगों के दुख दर्द बूँद सकें। सब धन कमाने की होड़ में लगे हैं। गंदी हो चली राजनीति में भी त्योहारों का मजा किरकिरा कर दिया है। हम सैकड़ों साल जुलाम रहे। लेकिन हमारे बुजुर्गों में इन त्योहारों की रंगत कभी कीकी नहीं पड़ने दी। आज इस अर्थ युग में सब कुछ बदल गया है। कहते हैं कि त्योहार के दिन न कोई छोटा। और न कोई बड़ा। सब ब्रावार। लेकिन अब रंग प्रदर्शन लिए जाएँ और बिना

पंचमी, हनुमान- जयंती, नाग-पंचमी आदि त्योहार रखे जा सकते हैं। यानि यहां हर दिन में एक त्योहार अवश्य पड़ता है। अनेकता में एकता की मिसाल इसी त्योहार पर्व के अवसर पर देखी जाती है। रोजमर्ग की भागती-दौड़ती, उलझनों से भरी हुई ऊर्जा प्रधान हो चुकी, वीरान सी बनती जा रही जिंदगी में ये त्योहार ही व्यक्ति के लिए सुख, आनंद, हर्ष एवं उत्तम स के साथ ताजगी भरे पल लाते हैं। यह मात्र हिंदू धर्म में ही नहीं वरन् विभिन्न धर्मों, संप्रदायों पर लागू होता है। बस्तुतः ये पर्व विभिन्न जन समुदायों की सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं और पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं। सभी त्योहारों की अपनी परंपराएं, रीति-रिवाज होते हैं। ये त्योहार मानव जीवन में करुणा, दया, सरलता, आतिथ्य सत्कार, पारस्परिक प्रेम, सद्बावना, परोपकार जैसे नैतिक गुणों का विकास कर मनुष्य को चारित्रिक एवं भावनात्मक बल प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति के गौरव एवं पहचान ये पर्व, त्योहार सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं। सामाजिक त्योहार और अंतर-विद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों के आत्मविश्वास और पारस्परिक कौशल के निर्माण में सहायता करने के लिए अद्भुत

त्योहारों के दिन लोगों के दुख दर्द पूछ सकें। सब धन कमाने की होड़ में लगे हैं। गंदी हो चली राजनीति ने भी त्योहारों का मजा किरकिरा कर दिया है। हम सैकड़ों साल गुलाम रहे। लेकिन हमारे बुजुर्गों ने इन त्योहारों की रंगत कभी फीकी नहीं पड़ने दी। आज इस अर्थ युग में सब कुछ बदल गया है। कहते थे कि त्योहार के दिन न कोई छोटा। और न कोई बड़ा। सब बराबर। लेकिन अब रंग प्रदर्शन भर रह गये हैं और मिलन मात्र औपचारिकता। हम त्योहार के दिन भी हम अपनो से, समाज से पूरी तरह नहीं जुड़ पाते। जिससे मिठाइयों का स्वाद कसैला हो गया है। बात तो हम पूरी धरा का अंधेरा दूर करने की करते हैं, लेकिन खुद के भीतर व्यास अंधेरे तक को दूर नहीं कर पाते। त्योहारों पर हमारे द्वारा की जाने वाली इस रस्म अदायगी शायद यही इशारा करती है कि हमारी पुरानी पीढ़ियों के साथ हमारे त्योहार भी विदा हो गये। हमारे पर्व त्योहार हमारी संवेदनाओं और परंपराओं का जीवंत रूप हैं जिन्हें मनाना या यूं कहें की बार-बार मनाना, हर साल मनाना हर समाज बंधु को अच्छा लगता है। इन मान्यताओं, परंपराओं और विचारों में हमारी सभ्यता और संस्कृति के अनगिनत सरोकार छुपे हैं। जीवन के अनोखे रंग समेटे हमारे जीवन में उत्सवधर्मिता की सोच मन में उमंग और उत्साह के नये प्रवाह को जन्म देती है। हमारा मन और जीवन दोनों ही उत्सवधर्मी है। हमारी उत्सवधर्मिता परिवार और समाज को एक सूत्र में बांधती है। संगठित होकर जीना सिखाती है। सहभागिता और आपसी समन्वय की सौगात देती है। हमारे त्योहार, जो हम सबके जीवन को रंगों से सजाते हैं, सामाजिक त्योहार एक अनूठा मंच प्रदान करते हैं इनमे साथियों के साथ सहयोग करने, मिलने और सामूहीकरण करना, अपनी प्रतिभा दिखाने और विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं के बारे में सिखाने और सीखने की क्षमता होती है। ये कौशल हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और अक्सर हमारे जीवन के लगभग सभी पहलुओं के मूल में होते हैं। इसलिए, वर्तमान समय में इनकी प्रासारिकता का जहां तक प्रश्न है, ब्रत -त्योहारों के दिन हम उक्त देवता को याद करते हैं, ब्रत, दान तथा कथा श्रवण करते हैं जिससे व्यक्तिगत उन्नति के साथ सामाजिक समरसता का सदेश भी दिखाई पड़ता है। इसमें भारतीय संस्कृति के बीज छिपे हैं। ''पर्व त्योहारों का भारतीय संस्कृति के विकास में अप्रतिम योगदान है। भारतीय संस्कृति में ब्रत, पर्व - त्योहार उत्सव, मेले आदि अपना दिखाए रखेंगे।

